सारंग-भजन-संग्रह



लेखक व प्रकाशक

पीयूषवाणी ब्रह्मचारी श्री सारंग जी महाराज

सारंग–सेवा–आश्रम । पो० उत्तरकाशी
वाया- (टेहरी) ● (उत्तर-प्रदेश)

सारंग-भजन-संग्रह



लेखक व प्रकाशक

पीयूषवाणी ब्रह्मचारी श्री सारंग जी महाराज

सारंग–सेवा–आश्रम । पो० उत्तरकाशी

वाया- (टेहरी) ● (उत्तर-प्रदेश)

१९७६ ● कीमत

* पाठकों से प्रार्थना *

महँगाई के इस जमाने में जब सभी चीज् महँगी है तो कागज व छपाई आदि भी जरूर महँगे होंगे। हम थोड़ी थोड़ी पुस्तकें ही छपाया करते है तथा रेल में अपने साथ ले जाने में लगेज भाड़ा व कुली मजदूरी भी लगती रहती है। किसी संत-महात्मा को व ब्राह्मण देवता को मुफ्त भी देनी पड़ती है।

इन्हीं सब कारणों से पुस्तक को और अधिक मोटी नहीं कर सके हैं अतः कोई भी सज्जन व्यर्थ की आलोचना नहीं करें। आलोचना करने से धर्म प्रचार में रुकावट पैदा होती है। पहले की पुस्तक से इस पुस्तक में अनेक भजन नये हैं। भजनों को धुनें तो आप सत्संग में आकर ही सुन सकते हैं।

निवेदक

ब्रह्मचारी सारंग उत्तरकाशी

❀ श्री सारंग जी का परिचय ❀

हरिद्वार से २०० किलो मीटर उत्तर में भागीरथी गंगा जी के किनारे भगवान विश्वनाथ जी की अति प्राचीन नगरी उत्तर काशी है। प्रचीन काल से ही यहाँ पर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महात्मा व त्यागी, तपस्वी, जीवन मुक्त संत रहते आये हैं।

उत्तरकाशी में विश्वनाथ मंदिर से १ मील उत्तर में उजेली नामक स्थान है जहाँ पर अनेकों संत-महात्माओं के आश्रम हैं इन्हीं आश्रमों में कैलाश-आश्रम के पीछे व तपोवन आश्रम के पास में सारंग-सेवा-आश्रम है।

श्री सारंग जी महाराज गर्मियों में तो इसी आश्रम में रहते हैं। तथा अन्य समय में भारत के भिन्न-भिन्न नगरों में गीता, रामायण व उपनिषदों के आधार पर सत्संग करने जाया करते हैं। आपकी वाणी बहुत सरस व सरल है इसी से लोग आपको पीयूषवाणी कहा करते हैं।

आपके भजन भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं जिनमें "श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है' नामक भजन तो हर शहर व हर गांव में गाया जाता है। आपने १. सुखी गृहस्थ आश्रम, २. सुख की खान, ३. सत विचार, ४. विवेक जागृति, ५. संत समागम, ६. मान-सरोवर, ७. दृष्टि, ८. चिंता फिकर से छुटकारा, ९. सारंग दृष्टान्त संग्रह, १०. सारंग भजन संग्रह; नामक पुस्तकें लिखी हैं।

● ब्रह्मचारी महेश ●

॥ ॐ ॥



मंगलाचरण



गजानन्द का नाम ले, शुरू करे जो काम ।
संकट कोई ना पड़े, सदा मिले आराम ॥

विद्यादाता सरस्वती, कृपा करो महान् ।
ज्ञानदान मुझको करो, दूर करो अज्ञान ॥

माता लक्ष्मी कर कृपा, भर दे सब भण्डार ।
दया दृष्टि जब तू करे, सुखी रहे परिवार ॥

सेवक राजाराम के, पवन पुत्र हनुमान ।
नमस्कार करके तुम्हें, करते हरि गुन गान ॥

सत्संग में मेरे आवना, उमा सहित महादेव ।
चरणकमल का दास मैं, करूं तुम्हारी सेवा ॥

गंगा जमुना सरस्वती, कृष्णा कावेरी नर्मदा ।
सिन्धु सरजू मन्दाकिनी, पावन करो सर्वदा ॥

शुकदेव नारद व्यास जी, मुनि बाल्मीक कविराज ।
तुलसी सूर कबीर को, वन्दन करता आज ॥

भव सागर से पार कर, पहुंचावे हरि धाम ।
ऐसे सतगुरु की शरण, सारंग को आराम ॥

कमलनयन कालिन्दीतट, कर मुरली गलमाल ।
मोरमुकुट मकराकृतकुंडल, गौवन संग गोपाल ॥

शरणागतवत्सल सुखद, भगतन के प्रतिपाल ।
सारंग आया तब शरण, कृपा करो नंदलाल ॥



सत्संग की महिमा

आवो भाई हम सब मिलकर आपस में सत्सग करें ।
जिसने जनम दिया हम सबको उसके गुणों का गान करें ।।

स्वप्न समान सकल जग झूठा परमेश्वर ही साँचा है ।
उसकी चेतन शक्ति से ही माया ने रंग राचा है ।।

सत रज तम इन तीन गुणों से माया सबको नचा रही ।
वो माया भी हाथ जोड़कर प्रभू के आगे नाच रही ।।

जो है प्रभू के सच्चे प्रेमी उनसे ये माया डरती ।
मान आज्ञा परमेश्वर की उनके सब कारज करती ।।

प्रभू के प्रेमी बनना चाहो तो भाई सत्संग में आवो ।
विषय वासना त्याग हृदय से निर्मल मनसे हरिगुण गावो ।।

पान करो सत्संग सुधा का निज आनन्द में मगन रहो ।
पावन नाम प्रभु का जपकर राम भरोसे मस्त रहो ।।

सत्संग में ये भजन बोलकर कथा-कीतन शुरू करेंगे ।
"सारंग" के श्रीकृष्ण साँवरे उनके सब दुःख दूर करें ।।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला इक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ।।



कृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने ।
प्रणत क्लेश नाशाय, गोविन्दाय नमो नमः ।।

ग्रावो भगवान तरस गये नयना ! [७

ग्रावो नन्दलाल तरस गये नयना ।
मदनगोपाल तरसगये नयना ।।

ग्रावो मेरे राम तरसगये नयना ।
तुम बिन मोहे पड़त नहीं चयना ।।

ग्रावो दीनानाथ तरसगये नयना ।
ग्रावो भोलेनाथ तरसगये नयना ।।

ग्रावो राधेश्याम तरसगये नयना ।
ग्रावो सीताराम तरसगये नयना ।।

ग्रब तो दरश दिखा मेरे मोहना ।
"सारंग" विनती सुन मेरे मोहना ।।

बाँके बिहारी जै हो तुम्हारी ।

जल्दी से सुन लो विनती हमारी ।।

हमको दिखादो सूरत तुम्हारी ।
हमको दिखादो लीला तुम्हारी ।।

हमको सुनादो मुरली तुम्हारी ।
हमको सुनादो गीता तुम्हारी ।।

सपने सो लागे दुनियाँ ये सारी ।
नवमें वसी है छवि ये तुम्हारी ।।

सारंग मै ग्राया शरण तुम्हारी ।
हमको तो दे दो भगती तुम्हारी ।।

एकबार तो आवो प्रभु जी ।

एक बार तो आवो प्रभु जी, एक बार तो आवो ।
तुम्हरे दरस के प्यासे नैना, इनकी प्यास बुझावो ।।

चित भी चिंतन करे तुम्हारा, अब तो मत तरसावो ।
जीवन खेती सूखी जावे, किरपा नीर बरसावो ।।

नैनन आगे बन्सी बजाके, मन्द मन्द मुस्कावो ।
सारंग तेरे द्वारे पुकारे, मोरि विनय सुनजावो ।।

आजा रे कन्हैया आजा ।

आजारे कन्हैया आजा; आजा रे कन्हैया आजा ।
देखले अपने जगकी हालत; अपना रूप दिखाजा ।।

गौवों का पालन कर तैने नाम गोपाल धराया था;
प्रेम के बस हो गोपीजन का माखन मिसरी खाया था ।
तुझको तेरी गौवें पुकारे; आजारे नन्दलाला ।।

जो तू आवे इस धरती पर माखन मिसरी सब खावें;
वृन्दावन बन जावे धरती घर-घर गौवें बँध जावें ।
असुर निकंदन सब दुःख भजन आजा रे नन्दलाला ।।

घर-घर गोपी तुझे पुकारे आजा नन्द दुलारे;
तेरे बिना अनाथ हो गये सारी दुनिया वारे ।
जीवन में अमृतरस घोले; ऐसी बंसी सुना जा ।।

संकटहारी गिरवरधारी ओ बनवारी टेर सुनो;
जनम-जनम के पाप मिटावो मनमें मेरे आन बसो ।
"सारंग" आँखियाँ भई बावरी सुन्दर छवि दिखला जा ।।

कहाँ तुम छिपे हो प्यारे कन्हैया यहां लाज मेरी लुटी जा रही है ।
दुशासन के हाथों तेरी द्रौपदी को सभा बीच साड़ी खिंची जा रही है ।।
शोहरत थी जिनकी सारे जहां में झुकता था सारा जहां जिनके आगे ।
देखो समय आज बदला है कैसा वीरों की गर्दन झुकी जा रही है ।।
जिन्होंने कभी मेरी सूरत न देखी वो देखें नंगा बदन आज मेरा ।
जूवे में मेरे पति हारे बाजी ये महलों की रानी लुटी जा रही है ।।
गुरु द्रोण बोलो पितामह जो बोल ये तुमसे तुम्हारी बहू पूछती है ।
सभा बीच नंगी करवा रहे हो लज्जा तुम्हें क्यों नहीं आ रही है ।।
सभा में भी मेरी नहीं सुनता कोई, मगर मेरी तुम से यही विनती है ।
अगर तुम न आये हो बाँके बिहारी, यहां शान तेरी घटी जा रही है ।।
खिंची जब न साड़ी तो हारा दुशासन मैं समझी ये फौरन तुम्हारा इशारा ।
साड़ी के हर तार में तुम छिपे हो इसीसे साड़ी बढ़ी जा रही है ।।

ये देखो शंकर लगाये समाधी ।

ये देखो शंकर लगाये समाधी हमें ज्ञान का है मारग बताता ।
रहो तुम जगत में निर्लेप होकर मेरी तरह से ये सबको सुनाता ।।
विवेक रूपी है चन्द्र सिर पर वैराग्य भस्मी मैं तन पर लगाता ।
कर्मों के सर्पो से मैं नाहीं बँधता क्रोध है बिच्छू से मैं नाहीं डरता ।।
तीनों गुणों का है त्रिशूल कर में, अनहद की वाणी का डमरू बजाता ।
निर्लोभता का मैं पहने बाघंबर निजानन्द में मैं सदा मग्न रहता ।।
विषयों से बन्द करके ये आँखें, प्रभू के भजन में मैं मनको लगाता ।
सन्तोष बटवृक्ष, के नीचे आसन एकान्त कैलाश में हूँ मैं रहता ।।
श्रद्धा उमाजो को संग लेकर सदा धर्म रूपी वृषभ पर मैं चढ़ता ।
ज्ञान की गंगा में सारंग न्हलाकर काया को काशी में मैं मुक्त करता ।।

卐 हे शिव शंकर दरश दिखावो 卐

जटा मुकट सिर गंग बिराजे, भव्य भाल पर चन्द्र प्रकाशे ।
भोलेनाथ ! भव पार करावो, हे शिव शंकर दरस दिखावो ।।

नीलकंठ पर विषधर सोहे, बाघम्बर सबका मन मोहे ।
कर त्रिशूल त्रै ताप नसावो, हे शिव शंकर दरश दिखावो ।।

गौरवर्ण तन भस्म सुशोभित, नंदी भृंगी निजगण सेवित ।
आशुतोष ! सब कष्ट मिटावो, हे शिव शंकर दरश दिखावो ।।

आप ही सब जग के आधार, सृष्टी का करते संहार ।
आकर अब आनन्द करावो, हे शिव शंकर दरश दिखावो ।।

शरणागत की सुनो पुकार, काटो सब जग के जंजार ।
"सारंग" सिर पर हाथ घुमावो, हे शिव शंकर दरश दिखावो ।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

इसी मंत्र का जाप करे जो, भवसागर को पार करे वो ।
अंत समय बैकुण्ठ में जाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

हृदय शुद्ध होवेगा उसका, जाप करेगा जो नर इसका ।
मोह जगत का सब मिट जाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

आदि सनातन हरि अविनासी, परम कृपालू घट-घट वासी ।
करे कृपा दरशन हो जाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे, जग में ऊँची पदवी पावे ।
वेद ज्ञान पूरण हो जाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

हरी नाम से लगन लगाले, सोता अपना भाग जगाले ।
"सारंग" सब संकट मिट जाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

हे कमलनयन करुणासागर, कब किरपा हम पर लाओगे ।
दीन हीन दुखियों को प्रभुजी, कब अपना दरश दिखाओगे ।।

गोविन्द तुमने ग्वालों के संग, माखन मिश्री खाया था ।
मेरे घर का रूखा, सूखा खाने को कब आओगे ।।

बाँके बिहारी बंसी बट पर, तुमने बंसी बजाई थी ।
मेरे घर पर हे मुरलीधर, मुरली कभी बजाओगे ।।

कर पर गोवर्धन को धरकर, ब्रज का संकट दूर किया ।
हे गिरधारी मेरी विपदा, कैसे आन मिटाओगे ।।

कुब्जा ने हे कृष्ण कन्हैया, चन्दन तुझे लगाया था ।
मेरे कर से कब मनमोहन, केसर तिलक लगाओगे ।।

हे दामोदर द्रुपदसुता का, तुमने चीर बढ़ाया था ।
मुझ गरीब की ओर प्रभुजी, कब अपना हाथ बढ़ाओगे ।।

द्वार पै आया दीन सुदामा, तुमने कंठ लगाया था ।
"सारंग" आया शरण तुम्हारी, उसको कब अपनाओगे ।।

मेरे घर श्याम सुन्दर को बुलाऊँ ।

श्याम सुन्दर मोहे दर्शन दीजो, चरण कमल लपटाऊँ ।
शील संतोष धरूं घट भीतर, प्रेम की जोत जगाऊँ ।।

अगर कपूर की करूं आरती रुमझुम झांझ बजाऊँ ।
ताथा थेई थेई निरत करूं मैं, पुष्पन भेंट चढ़ाऊँ ।।

भांति-भांति के सुन्दर मेवा, प्रभु तेरे भोग लगाऊँ ।
पलकन पलंग बिछाऊँ "सारंग", मन-मन्दिर में बिठाऊँ ।।

卐 अब भी समझ नर बावरे 卐

अब भी समझ नर बावरे, तन छूट जायेगा।
कच्चा घड़ा मिट्टी का है ये फूट जायेगा॥
हरिनाम जपने को मिली है देह ये सुन्दर।
तू इससे पाप करता है तो फिर नरकों में जायेगा॥
संसार से कर प्रीति क्यों भूला रे राम को।
सम्बन्ध सारा एक दिन ये टूट जायेगा॥
तूने ये समझा है कि यहां रहना है हमेशा।
रहना सराय का है ये कल छूट जायेगा॥
विषयों में बितादी है तैने जिन्दगी सारी।
यमराज के घर जायेगा तो पीट खायेगा॥
क्यों भूल बैठा है कि तेरा स्वामी राम है।
आवेगा उसके पास तो क्या भेंट लायेगा॥
पूछेगा स्वामी जग में तैने क्या किया है रे ?
मालिक के सामने अरे झूंठा कहायेगा।
"सारंग" अबतो चेत जा बिगडी को बनाले।
लेवेगा नाम राम का मुक्ती वो पायेगा॥

卐 राम का नाम लेकर जो 卐

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे।
ये अमर नाम दुनियाँ में कर जायेंगे॥
ये न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे।
वो जिधर भेज देगा उधर जायेंगे॥
टूट जाये न माला कहीं प्रेम की।
कीमती ये रतन सब बिखर जायेंगे॥
बात माना न माना खुशी आपकी।
हम मुसाफिर हैं कल अपने घरजायेंगे॥

प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो।

तेरा यश गाया वेदों ने; पार नहीं पाया वेदों ने।
भेद नहीं पाया वेदों ने; प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो॥
हमें तो तेरा सहारा है; और नहीं कोई हमारा है।
तू हीं प्राणों से प्यारा है; प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो॥
और सब झूठी माया है; दास तेरो शरण में आया है।
नाथ मुझे क्यों बिसराया; प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो॥
तुम्हारा नाम मिले भगवन; भक्ति का दान मिले भगवन।
सुबुह और शाम मिले भग वन; प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो॥
भले हैं, बुरे हैं, तेरे हैं; तेरी माया ने घेरे हैं।
फिर भी हम बालक तेरे हैं; प्रभु जी तुम बड़े दयालू हो॥
दिखाने दरशन आ जावो; मेरी बिगड़ी को बना जावो।
ये नैया पार लगा जावो; प्रभू जी तुम बड़े दयालू हो॥

卐 हम आ ही गये अब हे भगवन। 卐

हम आही गये अब हे भगवन, श्रीकृष्ण तुम्हारे चरणों में।
है तनमन धनसब कुछ अर्पण, भगवान तुम्हारे चरणों में॥
लाखों जनम लिये इसजग में, जाने कितने करम किये।
देखाहो नहीं दुनियाँ में कहीं, जो प्यार तुम्हारे नयनों में॥
तुम दयासिन्धु दीनों के नाथ, हम दीन पतित अति पापी हैं।
आ जाओ हमें पावन करने, सरकार हमारे सपनों में॥
अर्जुन के बहाने सब जगको, निष्काम करम उपदेश दिया।
समझा है यहीं गीता पढ़ के, है ज्ञान तुम्हारे वचनों में॥
'सारंग' की प्रभु विनती सुन लो, पल भर न बिसारें हम।
हमरा भी दाखिला हो जावे, भगवान तुम्हारे भगतों में॥

卐 देखो कैसी सुन्दर छवि है 卐

देखो कैसी सुन्दर छवि है सगुण ब्रह्म श्रीराम को।
आदि शक्ति वामाँग बिराजे जनक दुलारी जानकी।।
लछमन, भरत, शत्रुघ्न तीनों सनमुख खड़े निहार रहे।
पवन पुत्र प्रभु के चरणों पर तुलसी दल हैं चढ़ा रहे।।
मात कौशल्या लिये आरती मंद-मंद मुसकाय रही।
"सारंग" दासी लिये हाथ में सुन्दर चवँर डुलाय रही।।

卐 देखो कैसी सुन्दर छबि है 卐

देखो कैसी सुन्दर छबि है मनमोहन मतवाले को।
अनुपम शोभा आज बनी है यशोदा नन्ददुलारे को।।
मोर मुकुट सिर ऊपर साहे कानन में कुन्डल मन मोहे।
कमलनयन बिच काजलराजे अरुण ओष्ठमुख तेज बिराजे।।
मधुर हसन और तिरछी चितवन देखो प्रीतम प्यारे का....
गल वैजन्ती माला सुन्दर श्याम अंग शोभित पीताम्बर।
कर में बंसी कमर करधनी वक्षस्थल चमकत मरकत मणी।।
चरणन शान निराली है भव पार कराने वाले को....
झुनक झुनक बाजै पैजनियां ताल बजावत वृजग्वालनियाँ।
ग्वाल बाल संग माखन खावे, गोपियन के संग रासरचावे।।
"सारंग" सब मिलकर जय बोलो भक्तन के रखवाले....

卐 देखो कैसी सुन्दर छवि है 卐

देखो कैसी सुन्दर छवि है मेरे भोलेनाथ को।
सब सकट को पल में नासै दृष्टि दीनानाथ।।
कर में डमरू, सिर पर गंगा, गले सर्प, बाघम्बर चंगा।
इक लौटे पानी से खश हो, महिमा भोलेनाथ की।।
सुनो प्रेम से सब नर नारी, शिव हैं भोले भंडारी।
"सारग" शिव-शिव जपो जो चाहो, किरपा भोलेनाथ की।।

कौन कहता कि भगवान आते नहीं।
द्रोपदी की तरह से बुलाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता कि भगवान खाते नहीं।
बेर शबरी की जैसे खिलाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता कि भगवान सोते नहीं।
माँ यशोदा के जैसे सुलाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता कि भगवान रमते नहीं।
ग्वालबालों की जैसे रमाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता कि भगवान सुनते नहीं।
दुःख अर्जुन की जैसे सुनाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता वो संकट मिटाते नहीं।
आप विश्वास दिल में जमाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता प्रभु दर्शन देते नहीं।
ध्यान ध्रुव की तरह से लगाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।
कौन कहता हरी प्रेम करते नहीं।
गोपियों की तरह से निभाते नहीं॥
रामजी, रामजी, रामजी, रामजी।

卐 जो कहोगे वो करूंगा 卐

जो कहोगे बो करूंगा तुमको भूलूंगा नहीं ॥

तुम कहो तो शूद्र बन सेवा करूं संसार की ।
तुम कहो तो विप्र बन वर्षा करूं ज्ञान की ॥
तुम कहो तो क्षत्री बनके देश की रक्षा करूं ।
तुम कहो तो बनिया, बनके मैं भी कुछ धंधा करूं ॥
गर करावोगे फकीरी फिकर करूंगा नहीं । जो....

महल में रखेगा तूं तो मौज से रह जावंगा ।
झोंपड़ा जंगल में देगा चैन उसमें पाऊंगा ॥
तूं अगर राजा बनावे राज कर सकता हूं मैं ॥
तूं करावे गर मजूरी भार ढो सकता हूं मैं ।
गर बनायेगा कवि तो कविता रचदूंगा नई । जो....

टाट गर पहनायेगा तो ठाठ से पहनूंगा मैं ।
तूं अगर भूखा रखेगा भूख भी सहलूंगा मैं ॥
गर परिन्दा तूं बनादे पेड़ पर रह जावूंगा ।
गर मुझे गायक बनावे गीत तेरे गावूंगा ॥
गर तूं कहदे मौन हो जा मुंह से बोलूंगा नहीं । जो....

नारी बना या नर मुझे पन्छी बना या जानवर ।
दे अकल या बे अकल कायर बना या वीर वर ॥
सुख दे चाहे दुःख दे दाता या हंसादे या रुला ।
मैं हूँ सेवक तुम हो स्वामी कैसे दूं तुमको भुला ॥
राम का तोता हूं 'सारंग' मुख से बोलूंगा यही । जो....

कोई कोई बेचे सोना चांदी, कोई बेचे लोंग सुपारी ।
भाव-भक्ति हरि शरणागति से पूरन हाट हमारी ।।
कोई कोई बेचे हीरा मोती, कोई बेचे महल अटारी ।
संयम सेवा सुमिरण हरि को, पूंजी प्रेम हमारी ।।
कोई काई गाहक काम क्रोध का कोई ढूंढ़े लोभ अनारी ।
हमरी हाट वो ही गाहक आवे, जो हरि चरण पुजारी ।।
कोई कोई गाहक दर्शन चाहे, कोई चाहे मुक्ति प्यारी ।
"सारंग" बेचे नवधा भक्ति, आवो सब नर नारी ।।

आवो सब मिल राम पुकारें ।

आवो सब मिल राम पुकारें; जीवन अपना आज सुधारें ।।
शांति रूप सीता का जानो; आनंद रूप राम पहिचानो ।
इन्द्रिय संयम महावीर जी; जीवन के हैं रखवारे ।।
राम नाम भवसागर माहीं; तरने को नौका बन जाई ।
तप-जप पावन राम नाम को; सुखी हुए दुखियारे ।।
गौतम नारि अहिल्या तारी; विनती सुन लो राम हमारी ।
दोऊ कर जोड़ कहूँ मैं स्वामी; तुम ही एक हमारे ।।
जैसे और पतित तुम तारे; वैसे ही संकट हरो हमारे ।
दया करो दर्शन हो स्वामी; "सारंग" खड़ो दुवारे ।।

बोल मेरी जिव्हा हरी हरी ।

षट्‌रस भोजन पान करेगी; राम भजन में मरी मरी ।
बड़े जतन से बाग लगाया; माली तोड़त कली कली ।।
दूर हुई मनकी अँधियारी; सत्संगति में परी परी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो; तोता पढ़ावत गणिकातरी ।।

तेरा जनम जाय नर बीता। तू भज ले राम और सीता ॥

खेल कूद में बचपन बीता। विषयों में गई युवा अवस्था।
वृद्ध अवस्था में बहु चिन्ता। भजन प्रभू का ना कीता ॥

माया कारण जनम गमाया। सुत वनिता को खब रिझाया।
अंत समय कोई काम न आया। रहा भजन से तू रीता ॥

गई उसे जाने दे प्यारे। अब भी ले ले नाव किनारे।
मन में अपने निश्चय करले। हरी सिवा कोई नहीं मीता ॥

जिसने प्रभु से नेह लगाया। अपना जीवन सफल बनाया।
जनम मरण में फिर नहीं आया। सारंग यूं कहती गीता ॥

फिर मत कहना कुछ कर न सके।

ये दुर्लभ मानन देह मिला, पुनि मात पिता का स्नेह मिला।
पढ़ पढ़ कर विद्या संसारी, तुम भवसागर से तर न सके ॥

मिली तुम्हें अति सुंदर नारी, मिला पुत्र भी आज्ञा कारी।
पाकर इतने सगे सनेही, जीवन सुख से भर न सके ॥

जितनी भी माया जोड़ोगे, सब इस धरती पर छोड़ोगे।
मरने के बाद फिर क्या होगा, जब जीतेजी ही सुधर न सके ॥

कितनी बार गये सत्संग में, मन के रंगा नहीं प्रेम के रंग में।
अभिमानी होने के कारण, ज्ञान हृदय में धर न सके ॥ ॥

जब अन्त समय आ जायगा, तब क्या तुमसे बन पायेगा।
शक्ति रहते भी तुम सारंग, कुछ भजन प्रभु का कर न सके ॥

बेला अमृत भया आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जागे तू न जागा ।। बेला अमृत........
झोलियाँ भर रहे भाग्यवाले, सारे पतितों ने जोबन सम्हालें ।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा ।। साथी सारे....
कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया, आलसी बन के हीरा गवाँया।
उल्टी हो गई मती, करके अपनी खता रोने लगा ।। साथी सारे....
अर्थ वेदों का तूने न पाया, बेला अमृत गया न सम्हाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पै धर रौने लगा ।। साथी सारे....
भाई अबभी न तुमने विचारा, सिरसे ऋषियोंका ऋण न उतारा।
हंस का रूप था गन्दला पानी पिया बन के कागा ।। साथी सारे....

उठ जाग मुसाफिर भोर भई ।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है वो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ।।
टुक नींद से अंखियां खोल जरा, ओ गाफिल रब से ध्यान लगा।
ये प्रीत करन की रीत नहीं रब जागत है तू सोवत है ।।
अनजान भगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ ।
जब पाप की गठरी शीश धरी, फिर शीश पकड़ क्यूं रोवत है ।।
जो काल करे सो आज करले, जो आज करे सो अब करले ।
जब चिड़ियन खेती चुगडारी, फिर पछताये क्या होवत है ।।

राम कृष्ण कहिये उठि भोर ।

अवध ईश वे धनुष धरे है, यह वृज मोखन चोर ।।
उनके छत्र चवँर सिंहासन, भरत छत्रुहन् लछमन जोर ।
इनके लकुट मुकुट पीताम्बर, नित गौवन संग नंदकिशोर ।।
उन सागर में शिला तराई, इन राख्यो गिरि नख की कोर ।
नन्ददास प्रभु सब तजि भजिये, जेसे निरखत चन्द चकोर ।।

卐 हे भगवन सब जग के पालक 卐

हे भगवन तब जग के पालक, प्रातः काल प्रणाम करूं मैं।
मन-मंदिर में तुम्हें बिठाकर, अपने सारे काम करूं मैं॥
ये मानव तन मुझको देकर, कितना उपकार किया तुमने।
मैं क्या दूं इस सबके बदले, जो सुख दान दिया तुमने॥
तन भी तेरा मन भी तेरा, घर भी तेरा धन भी तेरा।
मैं दासी दर्शन की प्यासी, केहि विधि भजन करूं तेरा॥
सारंग की विनती ये स्वामी, निज चरनों की भगती देना।
पल में पार करूं भवसागर, एसी प्रभु जी शक्ति देना॥

सुबह उठकर सुमिरन करेगा।

सुबह उठकर जो सुमरिन करेगा, सारे दिन भर वो सुख से रहेगा।
सुबह उठकर जो सत्संग करेगा, सारे जीवन वो सुख से रहेगा॥
अपने मुख से जो कीर्तन करेगा, सारे दिन भर वो हंसता रहेगा।
सुबह उठकर जो गीता पढ़ेगा, मोह ममता मे वो न फंसेगा॥
जो भी ध्यान प्रभु का धरेगा, सारी ऊमर धनी वो रहेगा।
जो भी सन्तों को मस्तक नवेगा, सारी ऊमर वो निर्भय रहेगा॥
जो भी दुखियों की सेवा करेगा, नाम उसका अमर फिर रहेगा।
जो भी हरि की शरण को गहेगा, जा के गौलोक सारंग रहेगा॥

* मुझ पर दया करो भगवान *

प्रातःकाल उठकर मैं पहले शीतल जल से करूं सिनान।
फिर मैं आसन लगा हृदय में धरूं आपका ही मैं ध्यान॥
वाणी से मैं धीरे-धीरे, जपूँ आपका पावन नाम।
फिर उठकर जाऊँ सत्संग में, कथा आपकी सुनूँ ललाम॥
उसके बाद यथा शक्ति मैं, दीन जनों को देऊँ दान।
भोजन का धन्धे पर जाऊं, रखना दया तुम्ही भगवान॥
सुख सम्पत्ति परिवार बड़ाई, का न तनिक होवे अभिमान।
रैन पड़े "सारंग" सो जावूँ, करके तब चरणों का ध्यान॥

२१] 卐 प्रातः पांच बजे उठकर जो 卐

प्रातः पांच बजे उठकर जो, भजन प्रभु का है करता।
उसके मन की सारी आशा, परमेश्वर पूरी करता॥
प्रातःकाल उठकर जो सज्जन, सत्संग में आया करता।
प्रभु प्रेमियों के संग मिलकर, हरि के गुण गाया करता॥
संतों की वाणी को सुनता, गीता और रामायण पढ़ता।
ऐसा मानव अपने मन में, आनन्द का अनुभव करता॥
प्रातः उठकर मात पिता के, चरणों पर जो सिर धरता।
लम्बी आयु उत्तम विद्या, जग में यश और बल बढ़ता॥
प्रातःकाल यथा शक्ति जो मानव दान पुण्य करता।
सारंग यहां पर सुखी रहेगा, अगला जनमसफल करता॥

卐 तुम जग में आया करते हो 卐

तुम जग में आया करते हो, बन कभी कृष्ण बन कभी राम।
हे विष्णु तुम्हारे चरनों में अर्पित मेरा शत् शत् प्रणाम॥
तुमने रावण को मारा था, मथुरा में कंस पछारा था।
अति दुःखी दीन मानवता को, दे प्यारा-दुलार सवांरा था॥
तुम जग का रक्षण करते हो, पावन निसि वासर अष्टयाम।
तुम मानवता के रक्षक हो, और दानवता के भक्षक हो।
भक्तों को दर्शन देते हो, संतों का त्रास मिटाते हो।
सब मोह नष्ट हो जाता है, लेते ही प्रभु का मधुर नाम॥

* सुमिरन बिन गोते खाओगे *

गरभवास में कौल किया था फिर पीछे पछताओगे॥
मुट्ठी बांध के आये जग में हाथ पसारे जाओगे।
यह संसार कागज की पुड़िया बूंद पड़े गल जाओगे॥
क्या करनी कर आये जग में क्या करनी कर जाओगे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो भजन किये तर जाओगे॥

जो सुख देखा राम भजन में, सो सुख नहीं अमीरी में।
भला बुरा सबका सुन लीजे; कर गुजरान गरीबी में॥
प्रेम नगर में रहन हमारी; भलि बनी आई सबूरी में।
हाथ में कुंडी बगल में सोटा; चारों दिसि जगीरी में॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सहिब मिले सबूरी में॥

★ मन मस्त हुआ तो क्यों बोले ★

हीरा पायो गांठ गठियायो, बार-बार वाको क्यों खोले।
हलको थो तब चढ़ो तराज़ू पूरी भई तब क्यों तोले॥
सुरत कलारन भई मतवारन मदवा पी गई बिन तोले।
हंसा पाये मान सरोवर, ताल तलैया क्यों डोले॥
तेरा साहब है घट माहीं बाहर नैना क्यों खोले।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिल गये तिल ओले॥

मुझको कहां ढूंढे बन्दे में तो तेरे पास में

मुझको कहां ढूंढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में॥
ना मैं मथुरा न मैं काशी, न काबे कैलास में।
ना मैं रहता क्रिया करम में, नहीं जोग वैराग्य में॥
खोजी होय तो तुरन्त मिलूं मैं, पल भर की तलाश में।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में॥

हमको ओढ़ावे चदरियां चलती बिरियाँ

प्रान राम जब निकसन लागे, उलटि गई दोऊ नैन पुतरियां।
भीतर से जब बाहर लाये, छूट गई सब महल अटरियां॥
चार जने मिली खाट उठाइन, रोवत ले चले डगर-डगरियां।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चली इक सूखी लकरियां॥

卐 गुरुदेव तुम्हारी जय होवे 卐

तुमने आतम रूप लखाया, निजआनन्द का बोध कराया।
मेरा सब अज्ञान मिटाया, गुरुदेव तुम्हारी जय होवे ॥
शक्ति भी दी, भक्ति भी दी, युक्ति भी दी, मुक्ति भी दी।
शुद्धि भी दी, बुद्धि भी दी, गुरुदेव तुम्हारी जय होवे ॥
ऐसी किरपा करते रहना, मुझको दर्शन देते रहना।
"सारंग" को सुधि लेते रहना, गुरुदेव तुम्हारी जय होवे ॥

★ आज मेरे घर सतगुरु आये ★

चरण कमल मैं शीश नवाउं, मेरे भाग्य जगाए ॥
सुखी हुआ परिवार हमारा, सबके मन हरषाये।
प्रगट हुये हैं पुण्य हमारे संतन के दरशन पाये ॥
भवसागर का भय अब नाहीं, सतगुरु पार लगाए।
गुरु चरणों मैं बैठा सारंग, निर्भय हरिगुण गाये ॥

☼ गुरुजी मुझे भव से करना पार ☼

जनम-जनम से बहा जात हूं मोह-ममता की भारी धार।
काम-क्रोध दो ग्राह भयंकर, पकड़ रहे जगके नर नार ॥
कृपा आपकी सुदृढ़ नाव है, वचन आपके हैं पतवार।
श्रद्धा और विश्वास रखेगा, "सारंग" होगा बेड़ा पार ॥

❋ मुझे लागी लगन गुरु के चरणन की ❋

चरणबिना मोहे कछु न सुहावे; जग माया है सपनन की ॥
भवसागर सब सूख गयो है; फिकरनहीं मोहे तरनन की।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर; आस एक गुरु शरणन की ॥

❋ चदरिया झीनो रे झीनी ❋

काहे का ताना काहे की भरनी, कौन तार से बीनी ।
इंगला पिंगला ताना भरनीं, सुषमन तार से बीनी ॥
आठ कवल दस चरखा डोले, पांच तत्व गुन तीनी ।
सांई को सियत मास दस लागे, ठोक ठोक कर बीनी ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीनी ।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी ॥

★ सोच समझ अभिमानी ★

सोच समझ अभिमानीं, ये चादर भई पुरानी ॥
टुकड़े टुकड़े जोड़ जुगतसों, सीके संग लपटानी ।
कर डारी मैली पापन सों, लोभ मोह में सानी ॥
ना यही लगो ज्ञान को साबुन, ना धोई भल पानी ।
सारी उमर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहीं जानी ॥
शंका मान जान जिय अपने, ये है चीज बिरानी ।
कहत कबीर घर राख जतन से, फेर हाथ नहीं आनी ॥

卐 दिन नीके बीते जाते हैं 卐

सुमिरन कर श्रीरामनाम को, और बिसारो सभी काम को ।
मिथ्या जानो धरा धाम को, सतसंगी सुख पाते हैं ॥
जैसा मिठा लगे बतासा, मूरख फंसा मोह की फांसा ।
क्या देखे श्वासन की आशा देते हैं सो पाते हैं ॥
पुत्र कलत्र सकल परिवारा किसका तू और कौन तुम्हारा ।
किसके बल हरि नाम बिसारा, जीते जी के नाते हैं ॥
लख चोरासी भोग के आया, बड़े भाग मानुष तन पाया ।
यहां पै भी कुछ नहीं कमाया फिर पीछे पछताते हैं ॥

मिल गया जनम जब मानुष का, इसे क्यों गफलत में खोता है।
मिल गया संग जब संतों का, क्यों मोह नींद में सोता है॥
पिछले जनमों में भी तैंने, धन दौलत तो पाया था।
नारी भी थी, बेटा भी था। सब से नेह लगाया था॥
मिल गया खजाना राम नाम का, अब क्यों मूरख रोता है....
झूठ कपट के धन्धे करके, जीवन मैला कर डाला।
अमर आत्मा को नहि जाना; केवल इस तन को पाला॥
मिल गई ज्ञान की गंगा तो, क्यों पाप कर्म नहीं धोता है....
काम के मारग पर चलकर तू बहुत बार पछताया है।
क्रोध मार्ग पर चल कर तैंने अपना हृदय जलाया है॥
मिल गई राह अब भक्ति की, "सारंग" मन आनंद होता है....

✱ डगमग छोड़ दे मन बौरा ✱

अब तो जनम-मरण बनि आई, लीनों हाथ सिंधोरा।
प्रीति-प्रतीति करो दृढ़गुरु सों, सुनो शब्द घनघोरा॥
होय निसंग मगन होय नाचै, लोभ मोह भ्रम छांडै।
सूरा कहा मरन सों डरपै, सती न संचय भांडै।
लोक लाज कु की मरजादा, यही गले की फांसी।
आगे हो पग पाछे धरि हो, होय जगत में हाँसी॥
अगन जरे ना सती कहाये, रण जूझे नहीं सूरा।
बिरह अगनि अन्तर में जारैं, तब पावे पद पूरा॥
यह संसार सकल जग मैला, नाम गहे तेहि सूचा।
कहे कबीर भक्ति मत छाँड़े, गिरत पड़त चढ़ ऊँचा॥

✱ मेरे घर आग्रा प्रीतम प्यारा ✱

तन मन धन सब भेंट धरूंगी; भजन करूंगी तुम्हारा।
तुम गुणवंत सुसाहिब कहिये; मुझमें औगुण सारा॥
मैं निगुणी कछुगुण नहीं जानं; तुम हो बगसण हारा।
मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे; तुम बिन नैन दुखारा॥

भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे।
तो संसार सागर से तरते रहोगे॥
कृपानाथ बेशक मिलेंगे किसी दिन।
जो सतसंग पथ से गुजरते रहोगे॥
चढ़ोगे हृदय पर सभी के सदा तुम।
जो अभिमान गिरी से उतरते रहोगे॥
न होगा कभी क्लेश मनको तुम्हारे।
जो अपनी बड़ाई से डरते रहोगे॥
छलक ही पड़ेगा दयासिन्धु का दिल।
जो नयनों के बिन्दू से भरते रहोगे॥

* छोड़कर चरणों को तेरे ऐ प्रभु *

छोड़कर चरणों को तेरे ऐ प्रभु जाऊं कहाँ।
कोई नहीं दुनियां में मेरा आसरा पाऊ जहाँ॥
मैं हूँ वो फरियाद जिसको सुनने वाला कोई नहीं।
तुमने जो मुझको बिसारा ठौर फिर पाऊं कहां॥
भवर में नैया फंसी बैठे कहां मोहन मेरे।
क्या खता मुझसे हुई तुम हो गये किस जाँ निहां॥
क्या कहूं किससे कहूं श्री कृष्ण दे इतना बता।
ढूंढ हारा हूं मगर मिलता नहीं तेरा पता॥

* तुम नाम जपन क्यों छोड़ दिया *

क्रोध न छोड़ा लोभ छोड़ा, सत्यवचन क्यों छोड़ दिया॥
झूठे जग में दिल ललचाकर, असल वतनक्यों छोड़ दिया।
कौड़ी को तो खूब सम्हाला, लाल रतन क्यो छोड़ दिया॥
जिन सुमिरनसे अतिसुख पावे, तिन सुमिरन क्यों छोड़ दिया।
खालस इक भगवान भरोसे, तन,मन,धन, क्यों न छोड़ दिया॥

दो घड़ी भगवान का ले नाम तूं,
छोड़कर दुनियां का सारे काम तूं।
दो घड़ी का ध्यान भी रंग लायेगा,
दे समय थोड़ा सुबुह और शाम तूं॥
अपनेमन को स्वच्छ कर आसन जमा,
मन की चंचलता को प्यारे थाम तूं।
मन किसी का मत दुखाया कर सभी,
कर कभी उपकार के भी काम तूं॥
जो धरम के मार्ग पर चलता रहा,
पायेगा दुनियां में फिर आराम तूं॥

पार नैय्या हमारी लगा दीजिये।

पार नैय्या हमारी लगा दीजिये,
डूबते हैं भंवर में बचा लीजियें।
चाहते हैं प्रभो आप से हम यही,
अपनी भक्ति का अमृत पिला दीजियें॥
काम बिगड़े हुए सब सुधर जातेंगे,
ये अविद्या का पर्दा उठा लीजिये।
आप शिक्षा हमें दो प्रभू धर्म की,
धर्म मार्ग पै चलना सिखा दीजिये॥
एक हो जायें मिलकर के छोटे बड़े,
देश में प्रेम गंगा बहा दीजिये।

卐 चामड़े की पूतली भजन कर री 卐

चामड़े पूतलो ये चाबे नागर पान।
उजले उजले कपड़े पहिने, करती है गुमान ।।
चामड़े के हाथी घोड़ा, चामड़े का ऊंट।
चामड़े का बाजा बाजै चारों हो खूंट ।।
चामड़े का बाछड़ा है चामड़े की गाय।
चामड़े का दूहने वाला चामड़ो पी जाय ।।
चामड़े का राजा रानी, चमड़ी का बजीर।
चामड़े की सारी दुनियां कहत कबीर ।।

卐 तू टेड़ो तेरी टेढ़ी नजरियाः 卐

गोकुल तेरो टेढ़ो वृन्दावन तेरो टेढो,
टेढ़ी रे तेरी मथुरा नगरिया ।।
लकुट तेरी टेढ़ी मुकुट तरौ टेढ़ो,
टेढ़ी रे तेरी मुख की मुरलिया ।।
सखी तेरी तेढ़ी सखा तेरे टेढ़े,
टेढ़ी रे तेरी यशोदा डुकरिया ।।
गली तेरी टेढ़ी कुंज तेरी टेढ़ी,
टेढ़ी रे तरी यमुना डगरिया ।।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि,
जाऊं रे तेरी सदा बलइयाँ ।।

卐 आज दिवस लेऊं बलिहारा 卐

आज दिवस लेऊं बलिहारा।
मेरे घर आया राम का प्यारा॥
आंगन बंगला भवन भयो पवन।
हरिजन बैठे हरिजस गावन॥
करूं दंडवत चरन पखारूं।
तन मन धन उन ऊपर वारूं॥
कथा कहैं अरु अर्थ विचारैं।
आप तरैं औरन को तारैं॥
कहैं रैदास मिलै निज दासा।
जनम जनम के काटै पासा॥

卐 मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर 卐

मैं तो आन पड़ी चौरन के नगर।
सत्संग बिना जियरा तरसे॥
इस सत्संग में लाभ बहुत है।
तुरत मिलावै हरि से॥
मूरख जन कोई सार न जाने।
सत्संगति में अमृत बरसे॥
शब्द का हीरा पटक हाथ से।
मुट्ठी भरी कंकर से॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो।
सुरत करो वाहि घर से॥

卐 अरे मन मूरख खेतीवान; 卐

अरे मन मूरख खेतीवान जतन बिन मिरगन खेत उजारा ॥
पांच मिरग पचीस मिरगनीं, ता में एक सिगारा ।
अपने अपने रस के भोगी चरत फिरत न्यारा न्यारा ॥
काम क्रोध दोउ मुख्य मिरग हैं नित उठ चरन सवारा ।
मारे मरे टरे नहीं टारै, विडरत नहीं टारा ॥
अति प्रचण्ड महा दुःख दारुण, वेद शास्त्र पचि हारा ।
प्रेम वाण ले चढ़ियो पारथी, भाव भक्ति कर मारा ॥
सत की बाड़ धर्म की खाई, गुरु का शब्द रखवारा ।
कहत कबीर चरन नहीं पावे, अब की बार सम्हारा ॥

★ अरे वह बोलता कित गया रे ★

अरे वह बोलता कित गयारे काया नगरी तज के ।
दस दरवावे ज्यों के त्यों ही कौन राह गयो भज के ॥
सूना देश गांव भया सूना, सूने घर के वासी ।
रंग रूप कुछ और ही हुआ देही भई उदासी ॥
साजन थे सो दुर्जन हो गये, तनु को बांधि निकारा ।
चिता संवार लिटाकर तामें उपर धरै अंगारा ॥
ढह गया महल चहल थी जामें मिल गया माटी माँही ।
पुत्र कलत्र भाई अरु बांधव सब ही ठोक जलाहीं ॥
देखत हीं का नाता जग में मरे सग ना कोई ।
चरण दास शुकदेव कहत हैं हरि बिन मुक्ति न होई ॥

卐 अब में कौन उपाय करूं 卐

जेहि विधि मन को संसय छूटै, भव-निधि पार करूं ।
जनम पाय कछु भलौ न न कीन्हों ताते अधिक डरूं ॥
गुरु मत सुन कछु ग्यान न उपजो, पसुवत उदर भरूं ।
कह नानक प्रभु बिरद पिछानो, तब हों पतित तरूं ॥

ये बुराई है मनुष में मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ।
नीचे गिरता है जो कहता मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ॥

लंकपति रावण हरी थी जानकी छल वेष से ।
माना नहीं राणी का कहना मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ॥
पकड़ कर धरती पै पटका राम ने रावण को जब ।
पूछा तीरों पै सुला के तू बड़ा या मैं बड़ा ॥

हिरनाकुश ने मैं बड़ा बनना चाहा संसार में ।
राम का जपना छुड़ाया मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ॥
आ गये नरसिंह योधा पकड़ जालिम को लिया ।
पूछा घुटनों पै सुला के तू बड़ा या मैं बड़ा ॥

कंस अत्याचार कीन्हों देवकी वासुदेव पर ।
कहने लगा अभिमान से मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ॥
ले सुदर्शन चक्र धाये कृष्णजी जब कंस पर ।
पकड़कर चोटी कहा कि तू बड़ा या मैं बड़ा ॥

मत करो अभिमान झूठा जग में प्यारे भाइयो ।
दु:ख पायेगा वो जग मे जो कहेगा मैं बड़ा ॥
ये बुराई है मनुष में मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ।
नीचे गिरता है जो कहता मैं बड़ा हूं मैं बड़ा ॥

कहगये पवन पुत्र हनुमान। राम से बड़ा राम का नाम ॥
जपा था गणपति जी ने नाम, प्रथम पूजा करता संसार ।
सुनाकर सबको पावन नाम, करते शंकर जी भवपार ॥
कहरहे देवर्षी दिन रात। राम से बड़ा राम का नाम...
जपा था रत्नाकर ने नाम, बनगया बालमीक ऋषीराज ।
विभीषण जपताथा श्रीराम, मिलगया लंका का सब राज ॥
यही कह गये भक्त प्रहलाद। राम से बड़ा राम का नाम....
जपाथा ध्रुव जी ने भी नाम, पालिया सबसे ऊँचा धाम ।
जपा करते नरसी भी नाम, पूरण होते थे सब काम ॥
यही लिख गये हैं तुलसी दास। राम से बड़ा राम का नाम....
पुकारा द्रौपदी ने जब नाम, आगये चीर बढाने श्याम ।
नामले पिया मीराँ ने जहर, उस पर करी कृष्णने महर ॥
मानलो सारंगजी की बात। राम से बड़ा राम का नाम....

❋ सुन्दर समय सुबह और शाम ❋

सुन्दर समय सुबह और शाम। मुख से बोले राम का नाम ॥
हाथ पैर से काम भी करले, वाणी से कुछ नाम भी जपले ।
दो दिन तो दुनिया में जीना, क्या करना आराम ॥ मुखसे....
पल छिन तेरी ऊमर कटतहै, इन्द्रिय का भी तेज घटतहै ।
इक दिन तुझको जाना होगा, छोड़ बसंता गाम ॥ मुखसे....
भाई बन्धु और कुटुंब कबीला, महल खजाना मोटर बंगला ।
साँचा नाता परमेश्वर का, बाकी सब बेकाम ॥ मुख से....
सारंग मेरा बंसरीवाला, बिगड़ी बात बनाने वाला ।
भवसागर से पार करेगा, मनमोहन सुखधाम ॥ मुखसे....

प्रेम हो तो श्री हरी का प्रेम होना चाहिये ।
जो बने विषयों का प्रेमी उनको रोना चाहिये ।।

दिन बिताया ऐश और आराम में तुमने अगर ।
रात को सुमरिन हरि का करके सोना चाहिये ।।

बीज बोकर बाग के फल खाये हैं तुमने अगर ।
वास्ते परलोक के भी कुछ तो बोना चाहिये ।।

मखमली गद्दों पै सोये तुम यहाँ आराम से ।
सफर लम्बे के लिये कुछ तो बिछौना चाहिये ।।

छोड़ गफलत तूने पाये है यहां गिनती के स्वांस ।
भोग में विषयों के फँस इनको न खोना चाहिये ।।

❋ जन्म वह किस अर्थ का ❋

जन्म वह किस अर्थ का वह देह हैं किस काम को ।
रट लगाई ही नहीं जिसने हरी के नाम को ।।

जिसको ईश्वर ने दिया है प्रेम भक्ति का प्रसाद ।
उसको कुछ इच्छा नहीं इन्द्रादि के धन धाम को ।।

प्रेम हैं मेरा पिता और भक्ति मेरी मात है ।
यह जुगल जोड़ी है मेरे हृदय के विश्राम को ।।

प्रेम श्रद्धा भक्ति से भजते न जो श्रीराम को ।
उनको रखनी चाहिये मुख में रसना चाम की ।।

मैं सदा सेवक रहूं और वो सदा स्वामी रहें ।
आरजू हर रोज मन में एक राधेश्याम को ।।

★ मैं तुम्हें कभी तो पाऊंगी ★

जोगन का भेष बना करके; इस जग से आँख चुरा करके ।
मनके इकतारे पर भगवान; मैं गीत विरह के गाऊंगी ।।
पग नूपुर की झनकारों से; भावों भरे मधुर इशारों से ।
श्वासों के पंखों से उड़कर; तारों तक खोज लगाऊंगी ।।
तुम छुपना राधा के मन में; मधुवन की रंगीली कुंजन में ।
मैं बनकर ललित की वीणा; थिरकों पर तुम्हें नचाऊंगी ।।
आ श्याम सलोने मनमोहन; मन चोर मुरारी मधुसूदन ।
इक प्रेम डोर से बाँध हरी; मन मंदिर में बिठलाऊंगी ।।

❋ सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम ❋

पिछली साख भरूँ संतन की, अड़े सवाँरे काम ।।
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो नेक सरयो नहीं काम ।
निर्बल हो गजराज पुकार्यो, आये आधे नाम ।।
द्रुपदसुता निर्बल भई जा दिन, तजि आये निज धाम ।
दुःशासन की भुजा थकित भई, वसन रूप भये श्याम ।।
अपबल तपबल और बाहुबल, चौथा बल है दाम ।
सूर किशोर कृपा ते सब सुख, हारे को हरि नाम ।।

✲ प्रभु तुम साँचे मन के मीता ✲

कब सबरी काशी कर आई; कब पढ़ आई गीता ।
झूठे बेर विश्वम्भर चाखे; कीन्हीं प्रेम पुनीता ।।
यज्ञ दान गणिका कब कीन्हों; कब तीरथ जल पीता ।
बाँह पकड़ प्रभु पार उतारी; मन ही के परतीता ।।
कब करमा ने भोर सुमरिया; जप तप संजय कीता ।
नन्दलाल गोपाल प्रभु को खिचड़ी भोग धरीता ।।
सत्य समान और नहीं जग में; जुग जुग सुन्त भणीता ।
कहत कबीर साँच घट जाके; सकल लोक तिन जीता ।।

जब तक जग में जीते रहो; राम नाम रस पीते रहो।
राम नाम धन कभी न घटता; ज्यों ज्यों खरचै त्यों त्यों बढ़ता।
जग का खत्र लुटाते रहो ।। जब तक जग में........
राम नाम जब मन में आवे; बिगड़े काम सभी बन जावे ।
इसी से प्रीत लगाते रहो; जब तक जग में........
झूठे जग की झूठी प्रीती; एक राम की सांची मोती।
सारंग कहे निभाते रहो; जब तक जग में........

★ आज तुम्हें आना ही होगा ★

सुनकर बिनती मेरी श्याम; आज तुम्हें आना ही होगा ।।
सुनो गजराज की तुमने बचाई जान भी तुमने।
काम से मुझे बचाने को; आज तुम्हें आना ही होगा ।।
द्रोपदी की सुनकर आवाज; बचाई थी उसकी भी लाज।
क्रोध से मुझे बचाने कों; आज तुम्हें आना ही होगा ।।
सुन कर सारंग का आवाज; आगये जल्दी से बृजराज।
लोभ से मुझे बचाने को; आज तुम्हें आना ही होगा ।।

★ मेरे मन में ऐसी आवै ★

मेरे मन ऐसी आवै; मोहे प्रभुजी दरश दिखावै ।।
मैं चरणकमल लपटाऊँ; नयनन से नीर बहाऊँ।
मेरे मन में ऐसी आवै; प्रभुजी सिर पर हाथ घुमावै ।।
मैं पुष्पहार पहनाऊँ; फिर सन्मुख शीश नवाऊं ।
मेरे मन में ऐसी आवै; प्रभुजी मन्द मन्द मुसकावै ।।
मैं करूं आरती प्रभुजी को; फिर शोभा निरखूं उनकी।
मेरे मन में ऐसी आवै; प्रभुजी अपने हृदय लगावै ।।
मैं गीत प्रभु के गाऊं; और भव सागर तर जाऊं।
सारंग मन ये ही आवै; प्रभुजी अपना दास बनावै ।।

卐 मोरमुकुट बन्सीवाले की जै 卐

★ जो चाहे जगत में सुखी रहना ★

जो चाहे जगत में सुखी रहना। वो माने गुरुजी का कहना।।

सुबुह उठकर प्रभु का भजन करे, फिर पूज्यजनों को प्रणाम करे।
सादा भोजन, सादा ही रहना, मीठी वाणी सबको कहना।।

काम क्रोध मद लोभ से बचना, धीरज और शांति रखना।
निंदा नहीं किसी की करना, सत्संगत में जाते रहना।।

सुख में भाई फूल न जाना, दुख में भाई मत घबराना।
हे हरी ? जैसी तुम्हारी इच्छा, ये ही मुख से कहते रहना।।

झूठे जगकी बातें हैं झूटी, प्रभू की लीला परम अनूठी।
संतों की सेवा सदा करना, सारंग मन में मगन रहना।।

★ चिंतन करले राम का नाम ★

चिंतन करले राम नाम का चिंता ना करना चाहिये।
जग में जैसे राम रखे वैसे ही रहना चाहिये।।

राम कहे तो पहनले कपड़े जरी पाट के।
राम कहे तो झट लपेट ले टूक टाट के।।

कभी जो भरदे राम तेरा मीठे से मुखड़ा।
और कभी धर देवे सामने सूखा टुकड़ा।।

वो टुकड़ा भी हंसते हंसते खा लेना तुझको चहिये।
चिंतन करले राम नाम का चिंता न करना चहिये।।

राम कहे तो महल में रहजा, कहे राम जंगल में भगजा।
राम कहे बनजा ठाकुर, कहे राम तो हो जा चाकर।।

दोनों काम राम के है ये समझन सारंग को चहिये।
चिंतन करले राम मा नाम का चिंता ना करना चहिये।।

तुम बिन हमरे कौन सँवारे, सबही बिगड़े काज ।।
तुम जहाज मैं काग तुम्हारो, तुम तीज अन न जाव ँ ।
जा तुम प्रभू जो मार भगावो, अत ठौर नहीं पाव ँ ।।
मैं तो प्रभ जो शरण तुम्हारी, जानत सब संसार ।
मेरी हंसी-सो-हसी तुम्हारी, तुम ही देखो विचार ।।

मोकों कछु न चहिय राम

तुम बिन सब ही फीके लागे, नाना सुख धन धाम ।।
अष्ट सिद्धी नव निद्धि आपनी, और जनन को दीजे ।
मैं तो चेरो जनम जनम को, मुझको अपनो कीजे ।।
स्वर्ग फलन को मोहि न आसा, चरण-कमल के राखो पासा ।
ना वकुण्ठना मोक्षहि चाहूं . चरणकमल में चित्त ललचाऊ ।।
भक्ति न छाड़ों मुक्ति न मांगो, सुनिहो कृष्ण मुरारी ।
चरणदास की यही टेक है, तजौं न गैल तुम्हारी ।।

✻ राम बिना कोई तेरे काम न आवे ✻

इस माया झूठों प्रपंच लगि, रतन सो जनम गमावै ।।
कंचन कलश विचित्र चित्रकरि रचि पचि भवन बनावं ।
ता मैं ते तेही छन ही काढ़यो इक पल रहन न पावं ।।
घर की त्रिया कहे मैं सग चलूंगी धृति धृति धन खावै ।
चलत रही चितचोर मोर सुख एक न पगु पहुंचावै ।।
बोल बोल सब बलि मित्र जन लीनों सो जेहि भावै ।
पर्यो काज अंतन को विरियाँ ता पर आन वंधावै ।।
आशा करि करि जननो जायो कोटिन लाड़ लडावै ।
तोड़ लियो कटिहू को डोरा तापर वदन जरावै ।।
पतित उधारन गणिका तारन सो तू शठ बिसरावे ।
लियो न नाम नेकहूं धोके सूरदास पछितावै ।।

卐 अपना माल बचा बाबा 卐

बहुत गई थोड़ा है बाकी; अबतो अलख जगा बाबा।
थोड़ दिन का खेल तमाशा; क्यों आसक्त बना बाबा॥
अपना कहकर हुवा पराया? चेत अचेत जरा बाबा।
जीव अंश ईश्वर का अबतो; अंश में अंश मिला बाबा॥
जिसकी चीज उसी को देदे; अपना पिंड छुड़ा बाबा।
अहम् मिटा तो अपना कैसा; झगड़ा खूब मिटा बाबा॥
अनुपम आनंद श्री नारायण; अनुभव में चमका बाबा।
मन हरि हेतु लगा बाबा; तनजगके हेतलगा बाबा॥
दही है ये जग की दौलत; जग को खूब लुटा बाबा।
जग को रोकड़ जग गो दे दे; अपना पिंड छुड़ा बाबा॥

☆ सब दिन होत न एक समान ☆

एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह; सम्पति मेरु समान।
एक दिन जाय स्वपच गृहसवत; अम्बर हरत मसान॥
एक दिन दुल्हा सजत बराती; चहुं दिसीगढ़त नितान।
एक दिन डेरा होत जंगल में; कर सूघे पग तान॥
एक दिन सीता रुदन करत है; महा विपति उद्यान।
एक दिन रामचन्द्र मिली दोऊ; विचारत पुष्प विमान॥
एक दिन राजा राज युधिष्ठिर; अनुचर श्री भगवान।
एक दिन द्रौपदी नगन होत है; चीर दुःसासन तान॥
प्रगटत है पूरब की करनी; तज मन सोच अजान।
सूरदास गुन कहँ लगि बरनों; विधि के अंक प्रमान॥

तेरे द्वार पड़े जुग बीत गये; बोलो बोलो हरी कब आवोगे ?
पट खोलो पुजारिन आई है; निष्किंचन ग्वारिन आई है।
पिया रूप निहारन आई है; छुप क्यों दासी के मीत गये ।।
कब करुणा कोर निहारोगे; कब अपना बिरह सम्हारोगे ।
बोलो बोलो हरी कब आवोगे; क्यों मीत निभाना भूल गये ॥
कब अपनो कह पुचकारोगे; कब बिगड़ी नाथ संवाँरोगे ।
भव तारोगे दुख टारोगे; अगणित ग्रीष्म बहु बीत गये ।।
इस मौन मान का कारण क्या; मन भाई नहीं पुजारिन क्या ।
खाली जायेगी भिखारन क्या; निष्फल बिरहन के गीत गये ।।
मन मंदिर में अंधियारा है; गया बिछुड़ सनेही प्यारा है ।
अब जग में कौन हमारा है; दीपक नयनों के बीत गये ।।
जीवन धन अब मुस्का भी दो; कोई उसकी तान सुना भी दो ।
रसराज का रस वर्षा भी दो; मैं हार गई तुम जीत गये ।।

※ एक बार प्रभू ये बतला दो ※

एक बार प्रभु ये बतला दो, दासी को कब दरसन दोगे ।
कब ममता बन्धन काटोगे, कब अपने चरनों में लोगे ।।
वृन्दावन की वे सब ग्वालिन, कैसे तुम्हें रिझाती थी ।
क्या था उस माखन मिसरी में, जिस पर तुम्हें नचाती थी ।।
कैसे थे वे बेर अनोखे, शबरी ने सत्कार किया ।
विदुरानी के केलों का क्यों, छिलका भी स्वीकार किया ।।
मुझको वो बातें बतलादो, जिसको सुनने तुम आ जाते ।
मुझको वो भक्ति सिखलादो, जिसके वश में तुम हो जाते ।।
मुझसे कहदो कौन वस्तु से, है अनुराग तुम्हें भारी ।
क्या अर्पण करते हैं तुमको, भक्त तुम्हारे बनवारी ।।
ना जानूं मैं पूजन तेरा, ना जानू मैं हार सिंगार ।
हृदय समर्पण मैं कर दूंगी, तुम कर दो भवसागर पार ।।
अन्तरयामी तुम हो भगवन, फिर क्यों देर लगाते हो ।
आने को सारंग के सन्मुख, क्यों इतना शरमाते हो ।।

विषयन का विष कभी न व्यापे; होवे ना कबहूं अज्ञान।।
काम क्रोध नेरे नहीं आवें; लोभ मोह पुनि ना भटकावें।
मन में आवे ना अभिमान। ऐसी कृपा करो............।।
हानि लाभ सब ही सम जानूं; दुख सुख दोनूं किरपा मानूं।
तुझे लूं हर रंग में पहचान। ऐसी कृपा करो............।।
राम रूप से रावण मारा; कृष्ण रूप से कंस पछारा।
बृज में लीला करी महान। ऐसी कृपा करो............।।
जैसे गज के फंद छुड़ायो; तुमने द्रोपदी चीर बढ़ायो।
मेरी विनती भी लो मान। ऐसी कृपा करो............।।
जब तन करे जगत के काम; मन में रहे तुम्हारा नाम।
शान्ति का दे दो वरदान। ऐसी कृपा करो............।।
सारंग नित सत्संग में जाऊ; इक पल न तुमको बिसराऊ।
दीजे प्रेम भगति का दान। ऐसी कृपा करो............।।

✲ कन्हैया कन्हैया पुकारा करो ✲

कन्हैया कन्हैया पुकारा करो, जीवन को अपने सुधारा करो।।
मत पापों से मुंह अपना काला करो, लेकर ज्ञान का दीपक उजाला करो।
काम शत्रु को रण में पसारा करो, क्रोध पाप को दिल से हटाया करो।।
कृष्ण कहो चाहे राम कहो, सुबह कहो चाहे शाम कहो।
नेहा हरी से लगाया करो, विषयों से अपना किनारा करो।।
प्रभु को दया का भरोसा करो, न तुम किसी को रोसा करो।
जब जब संकट आया करे, सारंग प्रभु को पुकारा करो।।

★ रमैया में बसता जिया मेरा है ★

रमैया में बसता जिया मेरा है; कन्हैया में बसता जिया मेरा है।।
चरणों झाँकी को कैसे कहूं; मुखड़े की शोभा कैसे कहूं।
ये जग से अनोखा पिया मेरा हैं। रमैया में बसता जिया.......।।
भक्तों का ये ही पियारा है; दुखियों का ये ही सहारा है।
"सारंग" कहता जिया मेरा है। रमैया में बसता जिया.......।।

हरि को भक्ति बिसार कैसो काम रे कियो ॥
नौ दस मास गर्भ में रहकर हरी हरी कियो ।
बाहर आकर भूल गयो धिक्कार रे जियो ॥
पाँच बरस का भोला भाला, अब तो बीस भयो ।
मकर पचीसी माया कारन, देस विदेस गयो ॥
तीस बरस में लोभ भयो, मन बाढ़त नित्य नयो ।
लाख करोड़ी माया जोड़ी, अजहुं न तृप्त भयो ॥
वृद्ध भयो कफ बात ने घेर्यों, दुख नहीं जात सह्यो ।
सन्त समागम कियो न जीवन, विरथा ही खोय दियो ॥
यो जग नित मतलब को गरजी, झूठो ही राजि रहयो ।
कहत कबीर सुनो मन मूरख, क्यों हरि बिसर गयो ॥

☼ मन तोहे केहि विधि मैं समझाऊं ☼

सोना होय तो सुहाग मंगाऊं, बंकनाल रस लाऊं ।
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं, पानी कर पिघलाऊ ॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊ, ऊपर जीन कसाऊं ।
होय सवार तेरे पर बैठूं, चाबुक देकर चालाऊं ॥
हाथी होय तो जंजीर गढ़ाऊं, चारों पैर बधाऊं ।
होय महावत तेरे पर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊं ॥
लोहा होय तो ऐरण मगाऊं, ऊपर धुवन धुवाऊं ।
धूँवन को घनघोर मचाऊ, जनर तार खिचाऊं ॥
ज्ञानी न होय तो ज्ञान सिखाऊं, सत को राह चलाऊं ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अमरापुर पहुंचाऊं ॥

* करम गति टारे नाहिं टरे *

सतवादी हरिश्चन्द से राजा, नीच के घर पर नीर भरे ।
पांच पांडव कुंती द्रोपदी, हाड हिमालय माँहि गरे ॥
जग्य कियोबलि लेन इन्द्रासन, सो पाताल में जाय परे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, विष सों अमृत तुरत करे ।

卐 जानत है पर मानत नाहीं 卐

जानत है सब मात पिता को. कहते हैं वे पूज्य हमारे।
धन सम्पति लेना चाहते, सेवा में मन लावत नाहीं।।
जानत है सब गुरुदेव को! कहते हैं भगवान हमारे।
सुनते हैं उपदेश गुरु का ; मन में निश्चय आवत नाहीं।।
पति हमारे हैं परमेश्वर; मानत हैं भारत की नारी।
रोज सिनेमा जाना चाहे; आमदनी से खर्चा भारी।।
पीना शराब का है खराब; यों कहती है दुनियाँ सारी।
घर घर बोतल बोल रहा यों; प्रिय लगती है पर नारी।।
बड़े लोग यों कहते हैं बच्चों; मत पीना बीड़ी सिगरेट।
मालिक नौकर सभी पी रहे; भिकमंगे और भारी सेठ।।
झूंठ बोलना, निंदा करना; बड़े पाप हैं रे ऽऽ भाई।
कहते तो सब लोग सही हैं; झूंठ बोलता छोड़त नाहीं।।
जानत है ये सारी दुनियां; राम रम रहा हम सब में।
फिर क्यूं बनते ऐटमबम ये; समझदार जब हम सब में।।
जो चाहो सब बात समझना; तो प्यारे सत्संग में आओ।
ये जानो क्या है परमेश्वर; सारंग जीवन सफल बनावो।।

卐 भज नाम उमर रही थोड़ी 卐

चार जने मिल लेने को आये, किये काठ की घाड़ी।
जाड़लकड़ियाँ फूंक असदीनों, जस वृन्दावन की होरी।।१।।
सास महल के दस दरवाजे, आन काल ने घेरी।
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, निकसे प्राण खुपड़िया फोड़ी।।२।।
पेट पकड़ कर माता रोवे, बंयां पकड़ कर भाई।
लट छिटकाये तिरिया रोवे, बिछरत हंस की जोड़ी।।३।।
सत्त नाम का सुमिरन करले, बांध गांठ तूं पौढ़ी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी।।४।।

मोहिनी मूरति साँवरी सूरति; नयना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत; उर वैजन्ती माल॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित; नूपुर शब्द रसाल।
मीरां प्रभु संतन सुखदाई; भगत वछल गोपाल॥

* कोई कहियो रे हरि आवन को *

आप न आवै लिख नहीं भेजे; बान पड़ी लल-चावन की।
ये दोऊ नैन कह्यो नहीं माने; नदियाँ बहे जैसे सावन की॥
कहा करूँ कछु नहीं बस मेरो; पंख नहीं उड़ जावन की।
मीरां कहे प्रभु कबरे मिलोगे; चेरी भई तेरे दामन की॥

* अखियाँ हरि दर्शन की प्यासी *

देखन चाहत कमल नयन को, निसदिन रहत उदासी॥
केसर तिलक मोतिन की माला, वृन्दावन के वासी।
नेह लगाय त्याग गये तृनसम. डारि गये गल फांसी॥
काहू के मन की को जानत. लोगन के मत हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिन, लैहों करवत कासी॥

* चलो मन गंगा जमुना तीर *

गंगा जमुना निरमल पानी, शीतल होत शरीर।
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिये बलबीर॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहे, कुंडल झलकत हीर।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर सीर॥

* छोड़ मत जाना जी महाराज *

मैं अबला बल नाहिं गुसाँई, तुम ही हो मेरे सिरताज।
मैं निगुणी गुण नाहिं गुसाँई, तुम पूरण समरथ महाराज॥
तेरी होय के अब कित जाऊँ, तुम हो मेरे दिल के साज।
मीरां के प्रभु और न कोई, राखो अबके मेरी लाज॥

卐 श्याम सुन्दर अब तो हम 卐

श्याम सुन्दर अब तो हम आशिक तुम्हारे बन गये।
हम तुम्हारे बन गये और तुम हमारे बन गये ।।
जब ये दिल दुनियां का था दुश्मन हजारों बन गये।
अब ये दिल तुमको दिया हर दिल के प्यारे बन गये ।।
योग जप तप नेम से कोई बने बिगड़ा करे।
हम अजामिल गिद्ध गणिका के सहारे बन गये ।।
आंख भर देखेंगे जब तुमको समझ लेवेंगे हम।
दिल बिना वैकुण्ठ दृग बैकुण्ठ द्वारे बन गये ।।
बिरह नभ पर जब तुम्हारा ध्यान चन्द्रोदय हुआ।
प्रेम जल के बिन्दु जो टपके सितारे बन गये ।।

★ जा दिन पंछी उड़ि जै हैं ★

ता दिन तेरे तन तरुवर के सर्व पात झरि जै हैं ।।
घर के कहि हैं बेगहि काढ़ो भत भये कोउ खै हैं।
जा प्रीतम सों प्रीत घनेरो सोउ देखि डरैं हैं ।।
कहां बह ताल कहां वह शोभा देखता धूरि उड़ै है।
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सुमिरि सुमिरि पछितै हैं ।।
बिना गुपाल कोऊ नहीं अपनों जस कीरति रहि जै हैं।
सो तो सूर दुर्लभ देवन कों सत-संगत में पै हैं ।।

❋ जो कोई भूला मन समझावे ❋

अरब खरब लौं द्रव्य गाड़े खरचन खान न पावै।
जब जम आय केस गहि पटकें, दै दै सैन बतावे ।।
बोय बम्बूल अम्ब फल चाहै, सो फल कैसे पावे।
खोटा दाम गांठ ले डोलत भलि भलि वस्तु कमावे ।।
गुरु परताप साधु को संगति, भवसागर तर जावे।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, विमल विमल गुण गावे ।।

नबजिया वैद क्या देखे, मुझे दिल की बीमारी है ॥
कभी कफ रोग बतलावे, कभी तासीर गर्मी की।
जिगर का हाल तूँ मेरा, नहीं जाने अनारी है ॥
सनम की मोहिनी मूरत, बसी दिल बीच में मेरे।
नयन में चैन ना तन की खबर सारी बिसारी है ॥
असर करती नहीं कोई दवाई कीमियां तेरी।
बिना दीदार की दारू मिटै नहीं बेकारी है ॥
अगर दिलदार को मेरे मिला दे तूँ कभी मुझसे।
तो ब्रह्मानन्द गुण तेरा करूँ मैं यादगारी है ॥

★ अमरपुर लेचल रे सजना ☆

अमरपुरी की संकारी गलियां, अड़बड हैं चढ़ना।
ठोकर लगी गुरु ज्ञान शब्द की, उधर गये झपना ॥
बोही रे अमरपुर लागी बजरीयां, सौदा हैं करना।
वो ही रे अमरपुर सन्त बसत है, दरसन है लहना ॥
सन्त समाज सभा जहां बैठी, वहीं पुरुष अपना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर तरना ॥

❊ दशा मुझ दीन की भगवन ❊

दशा मुझ दीन की भगवन, सम्हालोगे तो क्या होगा !
अगर चरणों की सेवा में, लगाओगे तो क्या होगा ॥
मैं नामी पातकी हूं और, नामी पाप हर तुम हो।
जो लज्जा दोनों नामों की, बचा लोगे तो क्या होगा ॥
जिन्होंने तुमको करुणा कर, पतित पावन बनाया है।
उन्हीं पतितों को तुम पावन, बनालोगे तो क्या होगा ॥
यहाँ सब मुझसे कहते हैं, तू मेरा है तू मेरा है।
मैं किस का हूँ ये झगड़ा तुम चुकालोगे तो क्या होगा ॥
अजामिल गीध गणिका, जिस दया गंगा में तरते हैं।
उसी में बिन्दु सा पापी, मिला लोगे तो क्या होगा ॥

बड़े भाग मानुष तन पाया; बड़े भाग से सदगुरु पाया।
बड़े भाग सत्संग में आया; विचार कर तूँ विचार कर॥
नदी के पानी की तरह; तेरी जवानी की तरह।
जगत जा रहा काल के मुँह में; विचार कर तूँ विचार कर॥
कहां गया कारों का खजाना; कहाँ सिकन्दर की दौलत।
कहां गये भारत के राजा; विचार कर तूँ विचार कर॥
नारी में सुन्दरता क्या है; हाड-माँस की काया है।
एक दिन माटी में मिल जावे; विचार कर तूँ विचार कर॥
जो जन राम नाम जपता है; नाम सदा उसका रहता है।
"सारंग" साँची ये कहता है; विचार कर तूँ विचार कर॥

★ मेरा शंकर भोला भाला ★

मेरा शंकर भोला भाला; सबके कष्ट मिटाने वाला।
पहने बाघबर मृगछाला; डमंडम डमरू बजाने वाला॥
जटा में चन्दरमा सोहे; कान में कुंडल मन मोहे।
गले में शेष नाग डोले; तन पर भसम लगाने वाला॥
हाथ में है त्रिशूल भारी; करता नन्दी पर असवारी।
संग में पारवती प्यारी; सबकी बिगड़ी बनाने वाला॥
'सारग' शिव पर जल जो चढ़ावें; हर हर हर हर शब्द सुनावे।
उसके सब दुःख दूर करेगा; कैलास में रहने वाला॥

※ हरि ॐ नमः शिवाय ※

हरि ॐ नमः शिवाय शिव हरि ॐ नमः शिवाय॥
कैलास में बसत है महादेव; अंग बभूति रमावै।
गंगा बहत जटावों में सुन्दर, शेष नाग लपटावै॥
माथै सोहत तिलक चन्द्रमा, गिरजा संग सुहावै॥
हाथ जोड़कर बिनय करत जो; उनको दरश दिखावै॥
जो कोई ध्यान धरत है शिव का, परमानन्द पद पावै॥

—: सत्यम् शिवम् सुन्दरम् :—

卐 सारंग जी का लोक-प्रिय भजन 卐

श्री राधेगोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है !

मोरमुकुट माथे तिलक बिराजे गल वैजन्तीमाला ।
कोई कहे वसुदेव का नन्दन कोई कहे नन्दलाला ।।
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया मुरली मधुर बजावे ।
ग्वाल बाल के संग में कान्हा माखन मिसरी खावे ।।
अजामील को अन्त समय में तेरा नाम जब आया ।
यमदूतों से मुक्त कराके अपने धाम पठाया ।।
जल में गज को ग्राह ने घेरा जल में चक्र चलाया ।
जब-जब भीर परी भगतन पर नंगे पावों आया ।।
द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा साड़ी आन बढ़ाई ।
भगतों की खातिर आप बने प्रभू आकर सेना नाई ।।
अर्जुन का रथ तुम ने हांका भारत भई लड़ाई ।
नाम को लेकर विष भी पीगई देखो मीराँ बाई ।।
जो नर भजन करे नहीं भाई ऊमर वो विरथा खोता ।
राम नाम से गणिका तर गई पढ़ा पढ़ा घर में तोता ।।
नरसी के सब काम सवाँरे मुझको मत बिसरारे ।
जनम-जनम से तेरा "सारंग" तेरा ही नाम पुकारे ।।

卐 卐